नव भारत
संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

भारत - फ्रांस संबंध नए क्षितिज पर

फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रो की हालिया भारत यात्रा ऐसे समय में संपन्न हुई है जब विश्व व्यवस्था अस्थिरता, युद्ध और भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा के दौर से गुजर रही है. अमेरिका-चीन प्रतिद्वंद्विता, रूस-यूक्रेन संघर्ष और पश्चिम एशिया की जटिलताओं के बीच भारत और फ्रांस ने एक बार फिर यह स्पष्ट किया है कि वे किसी गुट की परिधि में बंधकर नहीं, बल्कि 'रणनीतिक स्वायत्तता' के सिद्धांत पर आगे बढ़ना चाहते हैं. यह दृष्टिकोण ही दोनों देशों की साझेदारी की असली ताकत है.

भारत और फ्रांस के संबंधों की विशेषता यह रही है कि वे तात्कालिक राजनीतिक लाभ पर आधारित नहीं हैं. 1998 के परमाणु परीक्षणों के बाद जब अनेक पश्चिमी देशों ने भारत पर प्रतिबंध लगाए थे, तब फ्रांस ने अपेक्षाकृत संतुलित और समझदारीपूर्ण रुख अपनाया था. वही भरोसा आज एक परिपक्व रणनीतिक साझेदारी में परिवर्तित हो चुका है. फ्रांस पहला पश्चिमी राष्ट्र था जिसके साथ भारत ने औपचारिक रणनीतिक साझेदारी स्थापित की. आज यह संबंध रक्षा, अंतरिक्ष, परमाणु ऊर्जा, समुद्री सुरक्षा और जलवायु परिवर्तन तक विस्तृत हो चुका है.

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रपति मैक्रो के बीच विकसित व्यक्तिगत तालमेल ने इस संबंध को नई ऊर्जा दी है. दोनों नेताओं के बीच संवाद केवल औपचारिक बैठकों तक सीमित नहीं है, बल्कि साझा दृष्टि पर आधारित है. मैक्रो की इस यात्रा के दौरान रक्षा प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण, जेट इंजन निर्माण, उन्नत नौसैनिक सहयोग और हरित ऊर्जा परियोजनाओं पर हुई चर्चाएं बताती हैं कि पेरिस भारत को केवल एक विशाल बाजार नहीं, बल्कि एक दीर्घकालिक साझेदार के रूप में देखता है. 'मेक इन इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत' के संदर्भ में फ्रांस की भूमिका विशेष महत्व रखती है. इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में दोनों देशों की समान सोच इस साझेदारी का एक और महत्वपूर्ण आयाम है. फ्रांस स्वयं हिंद-प्रशांत क्षेत्र में अपनी सामरिक उपस्थिति रखता है. वह इस क्षेत्र को स्वतंत्र, खुला और नियम-आधारित व्यवस्था के रूप में देखना चाहता है. भारत, जो स्वयं को 'नेट सिक्योरिटी प्रोवाइडर' के रूप में स्थापित कर रहा है, फ्रांस के लिए एक स्वाभाविक सहयोगी है. चीन की आक्रामक समुद्री नीति और शक्ति संतुलन की राजनीति के बीच भारत-फ्रांस सहयोग क्षेत्रीय स्थिरता का संतुलित विकल्प प्रस्तुत करता है.

रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की दिशा में हो रही प्रगति विशेष रूप से उल्लेखनीय है. केवल तैयार हथियारों की खरीद के बजाय संयुक्त उत्पादन और तकनीकी साझेदारी पर बल दिया जा रहा है. यह बदलाव भारत की दीर्घकालिक रणनीतिक सोच को दर्शाता है. इसके साथ ही अंतरिक्ष सहयोग, परमाणु ऊर्जा संयंत्रों की प्रगति और ग्रीन हाइड्रोजन जैसे क्षेत्रों में साझेदारी भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर की जा रही है. शिक्षा और जन-से-जन संपर्क भी इस संबंध को स्थायित्व प्रदान करते हैं. फ्रांस द्वारा भारतीय छात्रों के लिए अवसर बढ़ाने की पहल इस बात का संकेत है कि यह साझेदारी केवल सरकारों तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि समाजों के बीच भी मजबूत होगी. ज्ञान, नवाचार और स्टार्टअप सहयोग आने वाले दशक में संबंधों की नई आधारशिला बन सकते हैं.

समग्र रूप से देखें तो मैक्रो की यह यात्रा एक प्रतीकात्मक कूटनीतिक कार्यक्रम भर नहीं थी. यह एक स्पष्ट संदेश था कि बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था के निर्माण में भारत और फ्रांस की भूमिका निर्णायक हो सकती है. रणनीतिक स्वायत्तता की साझा समझ, पारस्परिक सम्मान और दीर्घकालिक दृष्टि इस साझेदारी को विशेष बनाती है. बदलती वैश्विक राजनीति में नई दिल्ली और पेरिस की यह धुरी स्थिरता और संतुलन का नया अध्याय लिख रही है. कुल मिलाकर भारत - फ्रांस संबंध इस समय नए क्षितिज पर हैं.

भारत-अमेरिका ट्रेड समझौते की हकीकत

राजीव खंडेलवाल

> 'संधि के प्रमुख प्रावधान- 1. भारतीय वस्तुओं पर अमेरिकन टैरिफ 50% से घटाकर 18% (कुछ पर तत्काल प्रभाव से). 2. रूस से तेल आयात में कमी के बदले अतिरिक्त 25% दंडात्मक टैरिफ हटाने का संकेत दिया गया है. 3. भारत ने अमेरिकी औद्योगिक एवं कुछ कृषि उत्पादों (जैसे ष्ष्ठत्नस्, सोयाबीन ऑयल, नट्स, फल, वाइन आदि) पर टैरिफ कम अथवा शून्य करने की सहमति दी है. 4 . अगले पाँच वर्षों में 500 बिलियन डॉलर मूल्य के अमेरिकी उत्पाद—ऊर्जा, विमानन, रक्षा व तकनीक—खरीदने की मंशा जताई गई है. 5 मूल देश नियम 6 बौद्धिक संपदा अधिकार . 7 गैर-शुल्क बाधाएं. पहली नज़र में यह गिव एंड टेक' का सौदा प्रतीत होता है. परंतु वास्तव में यह — ऊँट के मुँह में जीरा' या दूर के ढोल सुहावने —के समान है.

फरवरी 2025 से चल रही भारत-अमेरिका द्विपक्षीय व्यापार वार्ता के परिणामस्वरूप 6 फरवरी को अंतरिम समझौते के प्रथम भाग' की घोषणा की गई. औपचारिक और कानूनी रूप से बाध्यकारी संधि पर मार्च 2026 तक हस्ताक्षर होने की संभावना है. 6 फरवरी को जारी संयुक्त वक्तव्य के तुरंत बाद, व्हाइट हाउस' से राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा जारी कार्यकारी आदेश ने इस अंतरिम समझौते की कुछ शर्तों को लेकर कुछ नए प्रश्न व भ्रम' की स्थिति अवश्य खड़ी कर दी है. अत: प्रश्न उठना स्वाभाविक है, हमने क्या पाया-क्या खोया? इससे भी बड़ा प्रश्न- क्या हम एक बार फिर 1991-94 के डंकल दौर जैसी बहस के मुहाने पर खड़े हैं?

डंकल प्रस्ताव:ऐतिहासिक संदर्भ- 1991-94 का दौर याद कीजिए. जनरल एग्रीमेंट ऑन टैरिफस एंड ट्रेड के महानिदेशक आर्थर डंकल द्वारा प्रस्तुत मसौदा, जिसे प्रचलित भाषा में डंकल प्रस्ताव' कहा गया, उरुग्वे दौर (1986-1994) की बहुपक्षीय वार्ताओं का परिणाम था. इसमें कृषि, सेवाएं, बौद्धिक संपदा, वस्त्र, सब्सिडी और व्यापार नियमों में व्यापक बदलाव शामिल थे.

तुलना बेमानी?- डंकन बहुपक्षीय वार्ताओं का मसौदा था, जबकि भारत अमेरिका द्विपक्षीय है. यद्यपी दोनों ने अपने-अपने समय में राष्ट्रीय स्वायत्त, कृषि सुरक्षा और आर्थिक संतुलन पर लगभग एक से ही वैचारिक बहस को जन्म दिया. अत: यहां तुलना विषय वस्तु की नहीं, बल्कि राजनीतिक दृष्टिकोण और सार्वजनिक प्रतिक्रिया की है.

परिणाम'- तत्कालीन भारत सरकार पर डंकल प्रस्ताव पर हस्ताक्षर करने का जब अंतरराष्ट्रीय दबाव था तब भाजपा और संघ के कई संगठनों ने राष्ट्रव्यापी आंदोलन कर डंकल प्रस्ताव का घोर विरोध किया था. परंतु परिणाम क्या हुआ? डब्ल्यूटीओ की सदस्यता के बाद भारत की अर्थव्यवस्था ने 1990 के दशक के उत्तरार्ध में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की. औसत विकास दर 4-5% से बढ़कर 7-8% तक पहुंची. आज भारत विश्व की चौथी इकोनामी होकर प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में गिना जाता है. यह स्थिति तब है, जब भाजपा जिसने स्वयं डंकन प्रस्ताव का घोर विरोध किया था, उससे बाहर निकलने का उपलब्ध कानूनी विकल्प का उपयोग किए बिना उक्त उपलब्धि प्राप्त की. अर्थात, उस समय की आशंकाएँ कुछ हद तक निर्मूल सिद्ध हुईं.

फिर स्वस्थ आलोचना क्यों नहीं?- हाल में अमेरिका के साथ हुआ समझौता के विरुद्ध उड़ि जहाज का पंछी फिरि जहाज पर आये की तर्ज पर विपक्ष के स्वर उसी तरह से उठ रहे हैं, उल्टी माला फेर रहा है, जैसे पूर्व में वर्तमान सत्ता पक्ष भाजपा ने विरोधी पक्ष के रूप में उठाया था. इतिहास मानो अपने को दोहरा रहा है. परंतु प्रश्न यह है—क्या हम आर्थिक नीति पर तथ्याधारित विमर्श कर रहे हैं या सिर्फ राजनीतिक चश्मे से देख रहे हैं? आत्ममुग्धता अथवा आलोचना? ' स्वस्थ आकलन नहीं? लेन-देन' के इस युग में कोई भी आर्थिक नीति, समझौते, अनुबंध, पूर्णत: न तो लाभकारी होता है, न हानिकारक. अर्थात कभी गाड़ी नाव पर होती है तो कभी नाव गाड़ी पर.

अहस्ताक्षरित अनुबंध हुए अंतरिम द्विपक्षीय व्यापारिक सौदे की घोषणा को भारत ने ऐतिहासिक बताते हुए जिस तरह से स्वागत किया है, उस परिपेक्ष में उसके एक-एक बिंदु पर विचार करने पर स्थित कुछ स्पष्ट अवश्य हो सकती है. 50% से 18% टैरिफ घटना. सुनने में लाभकारी है. परंतु टैरिफ युद्ध प्रारंभ होने से पूर्व औसत टैरिफ लगभग 3% था, तो 18% अभी भी अधिक है. यह वैसा ही है जैसे पेट्रोल 80 रुपये से 110 रुपये कर दिया जाए और फिर 100 कर दिया जाए— न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी' वाली स्थिति.

भारत द्वारा अमेरिकी उत्पादों पर टैरिफ शून्य तक लाने पर घरेलू उद्योगों पर दबाव बढ़ेगा. घर का जोगी जोगड़ा, आन गाँव का सिद्ध —विदेशी उत्पाद सस्ते होंगे तो स्थानीय उद्योग प्रतिस्पर्धा में पिछड़ सकते हैं. भारत की इस सहमति ने ट्रंप की मोदी के व्यक्तित्व के बाबत कही यह बात कि वे सख्त नेगोशिएटर हैं, गलत सिद्ध हो जाती है. मतलब अगले 5 सालों मे भारी आयात से व्यापार संतुलन' अमेरिका के पक्ष में झुक जाएगा. अभी तक व्यापार अधिशेष भारत के पक्ष में था. रूस से सस्ता तेल लेना भारत की व्यावहारिक नीति देश हित में रही है.

(लेखक, कर सलाहकार एवं पूर्व अध्यक्ष, नगर सुधार न्यास)

महाकौशल की डायरी

भाजपा विधायक की खामोशी का फायदा उठाने में जुटी कांग्रेस...

अविनाश दीक्षित

क्या हुआ तेरा वादा, लापता विधायक जी के नारों से मझौली इलाका गूंजा तो भाजपा के कद्दावर नेता व विधायक अजय विश्रोई के समर्थकों के साथ शहर के संगठन के दिग्गजों के बीच चर्चाओं का बाजार गर्म हो गया. चर्चाएं थीं कि जब विधायक आश्वासन देने के लिए किसानों के पास मझौली पहुंचे तब किसी ने विरोध नहीं जताया और अब बेफिजूल बातें कर रहे हैं. मामला पिछले सप्ताह की चेतावनी से जुड़ा है, जो क्षेत्रीय विधायक अजय विश्नोई द्वारा प्रशासन को दी गई थी, लेकिन अब समय सीमा पूरी हो चुकी है, न तो समाधान सामने आया और न ही विधायक धरना स्थल पर नजर आए हैं. आंदोलनकारियों, किसानों का सीधा कहना है कि विधायक जी लापता हो गए हैं, उन्होनें सिर्फ दिखावे के लिए कलेक्टर को पत्र दिया था.

विदित हो कि मझौली के किसानों को धान का भुगतान नहीं किया जा रहा है और श्रीजी वेयर हाउस मझौली में धान की खरीदी में भ्रष्टाचार की बात सामने आ रही है जिसको लेकर मझौली के किसान काफी आक्रोशित हो चुके हैं. उनका ये भी कहना है कि जब जनप्रतिनिधि ही साथ में नहीं है तो फिर वे अब किसके सहारे पर टिकें. उधर दूसरी तरफ कांग्रेसियों ने भी मझौली के किसानों का दामन थामा है जिससे राजनैतिक गलियारों में सियासी माहौल तेज हो गया है. राजनैतिक जानकारों की माने तो कांग्रेस भाजपा विधायक के इस विरोध को भुनाना चाहती है और इसके लिए कांग्रेस के भी कई दिग्गज किसानों के समर्थन में आगे आकर प्रशासन से आर-पार की लड़ाई के मूड में दिख रहे हैं. अब देखना होगा कि किसानों का समाधान भाजपा विधायक के प्रयासों से निकलता है कि फिर कांग्रेस इसमें बाजी मार लेगी जिसका खामियाजा भविष्य में भाजपा को सकता है.

भेदभाव कर रहे डीन, मेडिकल में फूटने लगे बगावत के स्वर

संभाग के सबसे बड़े नेताजी सुभाषचंद्र मेडिकल कॉलेज में बगावत के स्वर फूटने लगे हैं. कयास लगाए जा रहे हैं कि अधीक्षक कार्यालय के करीब 500 कर्मचारियों की मांगों को अगर समय रहते पूरा नहीं किया गया तो मेडिकल अस्पताल के हालात काफी बिगड़ सकते हैं. दरअसल मामला मेडिकल अधीक्षक कार्यालय के करीब 500 कर्मचारियों के खाते में न्यू पेंशन स्कीम के करीब 5 करोड़ रुपए की राशि नहीं आने से जुड़ा है. आक्रोशित कर्मचारी मेडिकल के गलियारों में स्पष्ट रूप से ये कहते नजर आ रहे हैं कि हमारे साथ डीन भेदभाव कर रहे हैं जिन्हें अब बर्दाश्त नहीं किया जाएगा. कर्मचारियों के मुताबिक डीन कार्यालय की स्थापना के अंतर्गत आने वाले सभी कर्मचारियों की सीपीएफ की संपूर्ण राशि (नियोक्ता/अंशदान) उनके एनपीएस खाते में समायोजित कर दी गई है जबकि अधीक्षक कार्यालय कर्मचारियों को एनपीएस की आधी ही राशि दी गई है. कर्मचारियों की लड़ाई में मप्र लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा संघ भी अब उतर चुका है. ताजी अपडेट के हिसाब से डीन सिर्फ कर्मचारियों को आश्वासन ही देते नजर आ रहे हैं लेकिन उनकी समस्या का समाधान बीते कई महीनों से अधर में लटका हुआ है.

मौसम कार्यालय में चूहों की घुसपैठ...

पहले मेडिकल अस्पताल फिर जिला अस्पताल विक्टोरिया और अब करीब 50 साल पुराने संभागीय मौसम कार्यालय में चूहों ने आतंक मचाया तो हल्ला भोपाल तक हो गया. आलम ये है कि मौसम का हाल बताने वाला दफ्तर इन दिनों बादलों या आंधी तूफान का नहीं बल्कि भारी भरकम चूहों के झुंड के हमले से जूझता नजर आ रहा है. खबर है कि जबलपुर मौसम कार्यालय प्रभारी देवेंद्र कुमार तिवारी ने मौसम कार्यालय के बाजू में स्थित दाना गोदाम की शिकायत भोपाल के उच्च स्तरीय अधिकारियों से भी की है और मांग की है कि मौसम कार्यालय के बाजू से इस गोदाम को कहीं और स्थानांतरित किया जाए क्योंकि दाना गोदाम परिसर से ही बड़ी बड़ी पोल बनाकर बड़े आकार के चूहे झुंड में मौसम कार्यालय में प्रवेश कर रहे हैं और मौसम गणना उपकरणों के साथ एयर बैलून को भी काट रहे हैं. जबकि हाईड्रोजन गैस से भरे एयर बैलून को मौसम विभाग सुबह करीब 4 बजे प्रतिदिन आसमान में छोड़ा जाता है जिससे वायुमंडल में हवा की गति, दिशा और मौसमी अन्य आंकड़े दर्ज होते हैं. चूहों का आतंक मौसम कार्यालय में इतना है कि कर्मचारी भी उन्हें भगाने में नाकामयाब हो जाते हैं. कर्मचारियों की माने तो झुंड में बड़े आकार के चूहे आते हैं जिनके कारण बिल्लियां भी प्रवेश नहीं कर पाती हैं.

अब सुधरेगा बांग्लादेश का रवैया ?

बांग्लादेश में तारिक रहमान की नई सरकार का भारत के प्रति कैसा रवैया रहेगा? क्या वह अंतरिम सलाहकार मोहम्मद यूनुस के टकराव वाले रास्ते पर जाएगी या अपने बड़े पड़ोसी देश भारत के साथ रचनात्मक सहयोग करेगी? यूनुस तो अपने अंतिम संबोधन में भी भारत के 7 पूर्वोत्तर राज्यों तथा नेपाल व भूटान को साझा क्षेत्र बताने का जहरीला बयान देने से नहीं चूके. जब तक वह सत्ता में रहे, चीन की चापलूसी और पाकिस्तान से प्यार करते नजर आए. एक नोबल पुरस्कार विजेता अर्थशास्त्री होने के बावजूद उनकी सोच घटिया स्तर की थी. अब बांग्लादेश में बीएनपी की सरकार से उम्मीद है कि वह भारत से संबंध सुधार की दिशा में काम करे. भारत के विदेश मंत्री एस. जयशंकर दिसंबर में बेगम खालिदा जिया की दफनविधि में ढाका गए थे. लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला भी तारिक रहमान के शपथ समारोह में उपस्थित थे. इस तरह भारत ने आपसी संबंधों की निकटता को पूरा महत्व दिया है. तारिक रहमान ने अपने प्रचार भाषणों में भारत विरोधी बातें नहीं कहीं तथा धार्मिक स्वतंत्रता व सांप्रदायिक सदभाव पर जोर दिया. इतने पर भी बांग्लादेश पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना का प्रत्यर्पण चाहता है जबकि भारत उन्हें वापस बांग्लादेश भेजने के पक्ष में नहीं है जहां हसीना को उम्रकैद या फांसी दी जा सकती है. इतना हो सकता है कि हसीना को कोई बयानबाजी करने या मीडिया को इंटरव्यू देने से मना कर दिया जाए. कट्टरपंथी पार्टी जमात-ए-इस्लामी भारत से लगे सीमा क्षेत्रों में चुनाव जीती है. इसलिए विशेष निगरानी रखनी होगी. 2001 से 2006 तक बीएनपी और भारत विरोधी पार्टी जमात-ए-इस्लामी का गठबंधन था. बांग्लादेश की नई सरकार से भारत को उम्मीद है कि वह अपने यहां हिंदुओं की हत्या और हिंसक अत्याचारों पर सख्ती से रोक लगाए. तारिक रहमान 17 वर्ष के आत्मनिर्वासन के बाद बांग्लादेश लौटे हैं. यह उन पर निर्भर है कि उनकी नई सरकार भारत से हर क्षेत्र में सहयोग की नई इबारत लिखे या चीन और पाकिस्तान की पिछलग्गू बने. उन्हें समझना होगा कि अत्याचारी पाकिस्तान के चंगुल से छुड़ाकर बांग्लादेश के निर्माण में भारत ने कितनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

देश में महान आयोजन कराओ भिखारियों-झोपड़ियों को छुपाओ

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, रामायण में उल्लेख है कि सीता राम के विवाह से राजा दशरथ इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने सारे भीख मांगनेवालों को एकसाथ इतना धन दे दिया कि उन्हें जीवन में भिक्षा मांगने की आवश्यकता ही न पड़े. ऐसे ही महादानी कर्ण के पास जो कुछ मांगने आता था, वह यथेष्ठ धन लेकर वापस जाता था. इसे कहते हैं भिक्षा निवारण. अब ऐसा क्यों नहीं होता?'

हमने कहा, 'सरकार भिखारियों की समस्या अलग फार्मूले से हल कर रही है. जब राजधानी दिल्ली सहित देश के किसी शहर में अंतरराष्ट्रीय आयोजन होते हैं तो सरकारी मशीनरी भिखारियों को नजरों से ओझल कर देती है. यह पीसी सरकार के जादू जैसा होता है. सारे भिखमंगों को पकड़कर शहर से बहुत दूर कर दिया जाता है. गंदी बस्तियों व झोपड़पट्टियों पर आवरण डालकर छुपाया जाता है. दिल्ली में एशियन गेम्स व कॉमनवेल्थ गेम्स के समय यही हुआ. इसी तरह जी-20 के दिल्ली सहित विभिन्न शहरों के आयोजन के दौरान भी किया गया और अब दिल्ली में अंतरराष्ट्रीय एआई शिखर सम्मेलन में भी ऐसा ही हो रहा है. शहर को खूबसूरत और संपन्नता से परिपूर्ण दिखाना है तो भिखारियों को हटाओ और मलिन बस्तियों को कपड़े या साउंड बैरियर वाली दीवारों से ढक दो. इस पॉलिसी का नाम है परदे में रहने दो, परदा न हटाओ, परदा जो हट गया तो भेद खुल जाएगा.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, जब फ्रांस के राष्ट्रपति मैक्रो और गूगल के सीईओ सुंदर पिचई जैसी हस्तियां आई हों तो शहर सुंदरतम दिखना चाहिए. अपना घर साफ-सुथरा और चकाचक तो रखना ही होगा.'

हमने कहा, 'आयोजन समाप्त होने और विदेशी अतिथियों के प्रस्थान के उपरांत सब कुछ पहले जैसा ही हो जाएगा. सभी भिखारी अपने ठिकाने पर लौट आएंगे. मलिन बस्तियां फिर नजर आने लगेंगी. चार दिन की चांदनी फिर अंधेरी रात ही हमारी व्यवस्था का सच है जिसे कोई नहीं बदल सकता. हम विश्व की तीसरे नंबर की इकोनॉमी बन जाएं तब भी हमारे मंदिर, मस्जिद, दरगाह, चर्च के पास भिखारियों की जमात नजर आएगी. यह एक नंगी सच्चाई या शाश्वत सत्य है. हम बीमारी को छुपा या दबा सकते हैं, उसका इलाज नहीं कर सकते.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12176 - डॉ. सागर खादीवाला

1		2	■	3			
	■	4			■	■	■
5			■	■	6		7
	■	8	9	10		■	
■	11	■	12			13	
14		15	■		■		■
16			■	17	18	■	19
	■	20		■	21		

बाएं से दाएं

1. ईश्वर निर्मित प्रथम मनुष्य आदि मानव, मनुष्य (उर्दू) 3. भारत संबंधी, भारतवासी 4. डंका, धौसा 5. तोप चलाने वाला 6. मनुष्य (उर्दू) 8. कपड़े की बुनावट में लंबाई और चौड़ाई के बल बुने हुए सूत 12. बहाना 14. स्त्रियों के लिए आदरसूचक शब्द, रानी, पत्नी, ताश का एक पत्ता (उर्दू) 16. चखें, तकली आदि पर रूई या ऊन से धागा निकालना 17. विशेष, मुख्य, प्रधान (उर्दू) 20. रहित, शून्य 21. उत्तर-पूर्व का, स्वामी

ऊपर से नीचे

1. शीघ्र प्रसन्न होने वाला, शीघ्र संतुष्ट होने वाला 2. मन में सोचा हुआ, मनचाहा 3. किराया 6. पुरस्कार (उर्दू) 7. ऊंट-बैल आदि के नाक में बंधी हुई रस्सी 9. बौना, कम ऊंचा 10. बचपन का मित्र 11. वह व्यय जो किसी वस्तु को बनाने में खर्च होता है 13. किसी के टोकने से नजर का होने वाला अनिष्ट परिणाम, टोकने की क्रिया या भाव 14. खाली या निरुद्यम का भाव, वह अवस्था जिसमें निर्वाह के लिए किसी के हाथ में कोई काम धंधा न हो. 15. मना करने की क्रिया या भाव 18. वृद्धि, बरकत, सखी 19. घोड़े की पीठ पर रखने की गद्दी, काठी

Solution 12175

ध	र्म	प	रा	य	ण	■	ई
र	■	ग	म	क	■	वि	श्व
प	हा	ड़ी	■	ब	ट	मा	र
क	मी	■	का	य	र	ता	■
ड़	■	न	र	क	ट	■	हि
■	सु	रा	ग	■	रा	व	त
चु	■	ध	र	■	ना	म	क
प	र	म	■	■	■	न	र

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में राजनैतिक कार्यो में सफ्लता मिलेगी, नवीन योजनाओं का शुभारंभ होगा, वर्ष के मध्य में तीर्थ यात्रा या धार्मिक कार्यो में रूचि रहेगी, राज्य सम्मान मिलेगा, प्रभाव बना रहेगा, वर्ष के अन्त में पारिवारिक चिन्ता से मन विचलित रहेगा, कार्य क्षेत्र में आकस्मिक रूकावटें आयेंगी, धन संकट का सामना करना पडेंगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को नवीन योजनाओं का शुभारंभ होगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को राज्य सम्मान मिलेगा, प्रभाव में वृद्धि होगी, कर्क राशि के व्यक्तियों को तीर्थ यात्रा या धार्मिक कार्यों में रूचि रहेगी, सिंह राशि के व्यक्तियों को धन संकट का सामना करना पडेगा, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को पारिवारिक चिन्ता से मन विचलित रहेगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को आकस्मिक परेशानी आ सकती है, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को राजनैतिक कार्यो में सफ्लता मिलेगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्वस्थ्य, सुन्दर, एकांतप्रिय, ईमानदार होगा, परिश्रमी दृढ़ निश्चयी होगा, साहसिक कार्य करने वाला, बुद्धि का तेज होगा, बचपन में स्वास्थ्य कुछ नरम गरम रहेगा, बाद में अच्छा स्वास्थ्य रहेगा, आर्थिक स्थिति जीवन भर अच्छी रहेगी.

उदयकालीन ग्रह चाल

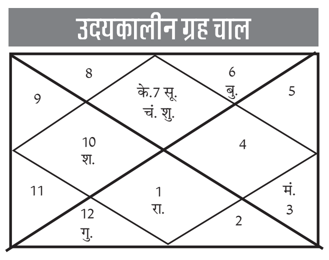

पंचांग

रा.मि. 01 संवत् 2082 फाल्गुन शुक्ल तृतीया भृगुवासरे दिन 3/4, उत्तराभाद्रपद नक्षत्रे रात 8/43, साध्य योगे रात 7/11, गर करणे सू.उ. 6/21, सू.अ. 5/39, चन्द्रचार मीन, शु.रा. 12, 2, 3, 6, 7, 10 अ.रा. 1, 4, 5, 8, 9, 11 शुभांक- 5, 7, 1.

व्यापार भविष्य

फाल्गुन शुक्ल तृतीया को उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, तांबा, लोहा, गुड, खांड, चीनी, ज्वार, मोट आदि में तेजी होगी, घी, गुड, जौ, चना के भाव में नरमीं होगी. भाग्यांक 3712 है.

मेष- जीवनसाथी के स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी, लोगों की बातों से मन परेशान रहेगा, दिनचर्या नियमित रहेगी, व्यापार व्यवसाय में अच्छी सफ्लता प्राप्त होगी.

वृषभ- सूझबूझ से फैसला लेने में सफ्लता मिलेगी, जिद में आकर अपना नुकसान न करें, आकस्मिक खर्च में वृद्धि होगी, दैनिक कार्यों में परिवर्तन होगा.

मिथुन- योजनओं को पूरा करने में मदद मिलेगी, इच्छानुसार सभी कामकाज पूर्ण होंगे, संपर्क सुखद एवं लाभदायक रहेगा, आत्म विश्वास में वृद्धि होगी.

कर्क- पारिवारिक आयोजन में शामिल होकगर खुशी मिलेगी, राजकीय उलझनें दूर होंगी, अधिकारियों से सहयोग मिलेगा, नई जवाबदारी आ सकती है.

सिंह- नए सौदे हाथ में आने से अच्छा लाभ होगा, विवाह की चर्चाओं में सफ्लता मिलेगी, भाग्यवर्धक प्रयास पूर्ण होंगे, निजी मामलों में सामंजस्य बना रहेगा.

कन्या- सामाजिक कार्यों में भागीदारी बढ़ेगी, मेहनत के बावजूद सफ्लता मिलना मुश्किल है, आर्थिक समस्या का समाधान होगा, पारिवारिक विवादों को टालें.

तुला- विरोधी उलझाने का प्रयास कर सकते हैं, मेहमानों की आवाजाही बनी रहेगी, पारिवारिक सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी, नये मित्रों से मुलाकात होगी.

वृश्चिक- संबंधों को बेहतर बनाने की कोशिश करेंगे, कोर्ट कचहरी के कार्यों में व्यस्तता रहेगी, पारिवारिक जवाबदारी बढ़ेगी, धार्मिक कार्यों में मन लगेगा.

धनु- तनाव की स्थिति में परिवार का साथ खुशी देगा, रोजगार के इच्छित अवसर मिल सकते हैं, पूज्य व्यक्ति की सलाह उपयोगी रहेगी, अनावश्यक विवादों से बचें.

मकर- राजकीय मामले में पक्ष मजबूत होगा, प्रापर्टी खरीदने का मन बनेगा, अत्याधिक व्यस्तता होगी, सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी, निजी मामलों में एक रूपता रहेगी.

कुम्भ- मामूली बात को लेकर कार्य स्थल पर परेशानी होगी, अपनी सीमाओं का ध्यान रखें, प्रयास करने से विरोधियों का शमन होगा, भाग्यवर्धक समाचार मिलेगा.

मीन- युवाओं को केरिअर में बेहतर परिणाम मिल सकते हैं, तय कार्यक्रम में बदलाव से परेशानी होगी, प्रिय व्यक्ति के आगमन से प्रसन्नता रहेगी. खानपान पर ध्यान दें.

SUDOKU 7308

7							4	
		5		3			7	
					8			2
					1	9		
	2						8	
		6	7					
1			4					
	9			2		5		
	8							1

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सु-डोकू 7307

8	4	5	6	1	3	7	2	9
7	2	6	4	9	5	3	8	1
9	3	1	7	8	2	6	5	4
1	7	2	9	6	8	4	3	5
5	6	9	3	2	4	1	7	8
4	8	3	5	7	1	9	6	2
2	9	7	1	5	6	8	4	3
3	1	8	2	4	7	5	9	6
6	5	4	8	3	9	2	1	7